शारदा-विजय

(खण्ड-काव्य)

मिथिलाक लोक-प्रसिद्ध बिदुषीक
पद्यात्मक गौरव-गाथा

—

रचयिता

श्रीउपेन्द्रनाथ झा

प्रकाशक

मैथिली-मन्दिर, दरभङ्गा ।

पूर्वोक्ति—

.. प्रस्तुत लघु पद्यगाथा दार्शनिक मिथिलाक ओहि गौरव-युगक पुण्य स्मरण करबैत अछि, जहिया 'स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं' विषयपर मैथिल कुटीक कोराङ्गना सभ शास्त्रालाप करैत छल । एकर श्रेय शिष्यापशिष्य-मंडित मिथिलाक चौपाडिएक नहि छल, अपितु तिरहुतिक आङ्नोक छल जतय अन्नपूर्णाक संग महाविद्या समान रूपें पूजित छलीह ।

मैथिल पण्डित मण्डन मिश्रक धर्मपत्नी शारदा (भारती) क संग जगद्‌गुरु शङ्कराचार्यक पराजयक चमत्कारपूर्ण गाथा एहि लघु काव्यमे अङ्कित अछि । मैथिलीक सिद्धहस्त लेखक श्री उपेन्द्रनाथ झा जी (इंजीनियर, सिन्द्री; मानभूम) प्राच्यविद्या - महासम्मेलनक मिथिलाऽधिवेशनक उपयुक्त अवसरपर एहि पुस्तिकाक रचना कैलन्हि जे 'स्वदेश' मे छपल । किन्तु तत्काल ओकर प्रकाशन कें स्थगित रहवाक कारणें ई आवश्यक प्रतीत भेल जे ओकर 'रिप्रिन्ट' पुस्तिकाकार मे प्रकाशित कैल जाय । आशा अछि, एहि व्यवस्थें पाठककें स्वदेश-गौरवक संघ स्वभाषाक ओजस्विता, प्राञ्जलता ओ काव्यचमत्कारकें स्वादवाक अवसर भेटतैन्ह ।

स्वदेश - कार्यालय, दरभङ्गा
अनन्त चतुर्दशी, १३५८

—सुरेन्द्र झा

शारदा-विजय







श्रीउपेन्द्रनाथ झा

शारदा - विजय

"जयतु शंकर प्रव्रज्याचार्य्य—"
व्यथित - मन सुनल मैथिल - आर्य्य;
सुनल सभ लोक,—सभ विद्वान,
देश देशक, समागत अरु पाबि कए सम्मान
छला श्रेणीबद्ध बैसल;
सुनल ऋषि, मुनि धीर,
सुनल मैथिल - वृन्द, बालक, युवक, वृद्ध अधीर,
मन्द अरु गम्भीर ई जयकार !
सभा-निर्णायक-पदस्थित 'शारदा' क विचार !!
दीर्घ सोलह दिवस धरि शास्त्रार्थ,—
श्रुति, स्मृति, वेदान्त - दर्शन सकल अर्थ पदार्थ,
विविध तर्क वितर्क;
दुइ पंडित प्रकाण्डक युद्ध,
उभय पक्ष समान, विजयी, शुद्ध अरु सम्बुद्ध,
शास्त्रमय तूणीर सँ लए वचनशर अविराम
बुद्धि चाप चढ़ाए छोड़थि, विजय हित मनकाम ।

एक संन्यासी युवक 'शंकर' छला' विख्यात,
अपर मैथिल-मौलि मंडन मिश्र यश अवदात ॥
भेल निर्णय, भेल जय जयकार,
तुमुल-करतल-ध्वनि-प्रकम्पित भेल नभ शतवार ।
विजय-गर्व्वोन्नत सकल दक्षिणाक पंडितवृन्द,
कएल सम्भाषण परस्पर मंद, जनु मकरंद पीबि मिलिन्द ।२०
अन्य प्रान्तक पंडितहु विच छल बहुत सन्तोष,
सर्व्वदा मैथिल-पराजित, हुनक मनमे क्षुद्र ईर्ष्या-दोष
छल सतत, ओ आइ भए गेल शान्त,
आइ हुनकर दग्ध हिअ अछि तृप्त, शान्त नितान्त !
अरु प्रथम निज मानहानिक दृश्य, ई परिताप,
सकल मैथिल—विज्ञ, पुरनरनारि, ई सन्ताप
सहथि नतशिर, मौन बैसल, क्षुब्ध, संज्ञाहीन,
प्रबल वात्याहत समुन्नत विटप जनु श्रीहीन !
सूनि निज जयकार,
दीप्त-तेजःपुञ्ज शंकर, स्मितवदन,

महाभारत मध्य शतशर-बिद्ध भीष्म प्रवीर
सम छला' ई वृद्ध गुरु, उद्विग्न-चित्त अधीर ।
तुमुल जय जयकार,
हिनक प्रतिपक्षीक जय जयकार !
दीर्घ जीवनमे प्रथम ई कुलिश कर्कश ध्वनि करैछ प्रहार !
स्तिमितलोचन, किन्तु ओ जयकार,
शून्य नभमे कुंडलायित धूम्र अक्षर बनि अनैछ विषाद,
ग्लानि बनि साकार, करइछ अट्टहास प्रमाद !
अन्तरात्मा व्यथित करइछ—मैथिलक जयमाल
आइ भए गेल म्लान, उन्नत वैजयन्ती लाल,
आइ अछि अवनत, विजय यशगान
मन्द, नीरव । मैथिलक जे आत्मगौरव, मान,
प्रतिष्ठा छल—भेल सभटा ध्वस्त,
हमर-मिथिला-मैथिलक—की भाग्य-भास्कर अस्त ?
आओर अधिनायक एकर हम—पराजित—धिक्कार !
छिः हमर जीवन, हमर पाण्डित्यकेँ धिक्कार !!

अल्पवयसक युवक सँ ई हारि !
की कहत मिथिलाक पुर-नरनारि ?
की कहत भावी हमर सन्तान ?
जन्मभूमिक दिव्य उन्नत भालपर देखत कलंकक दान !
आइ सन्यासी बनब हम—भारतीक समस्त,
छथि जखन निर्णायिका ओ मौन भए निष्पक्ष !
हुनक शुभ आशा-लतापर ई तुषारापात
भेल छल की एहन कहिओ मानसिक आघात ?
छलन्हि स्वप्नहुमे न आशंका जकर से स्पष्ट ।
देखि कत सन्तप्त हिअसँ सहथि मार्मिक कष्ट !
आओर हम कारण एकर ! धिक्कार !
आइ प्रतिपक्षीक जयजयकार—
सुनि रहल छी हम एतए हतबुद्धि !
युवक सन्यासीक अछि कत ज्ञान,
की प्रतिभा अलौकिक सिद्धि !
सिद्धि ?

सिद्धि निश्चय—की स्वयं शंकर लेलन्हि अवतार !
आन के एहि भूमिपर अछि जकर गूढ़ विचार
करत हमरा मौन—
करत मंडन मिश्रकें शास्त्रार्थमे जे मौन ?
ब्रह्मचारी रूपमे अछि महादेवी शक्ति—
होइछ किछु किछु भक्ति.........।
देखि एहि विधि लौन मंडन मिश्रकें बहुकाल,
वृद्ध मुनि जैमिनि, सुशोभित शुभ्रश्मश्रुक जाल-
ऊठि कहलन्हि—
"आर्य्य मंडन मिश्र, छी अहँ धन्य,
वेद-विद्या, ज्ञानमे अछि भूमिपर के अन्य,
जे करत शास्त्रार्थ हिनकर संग-
ईश्वरक अवतार पुरुषक संग ?
थिकथि ई, जे 'कपिल' भए सांख्यक कएल निर्म्माण,
देल 'दत्तात्रेय' रूपें योग-दर्शन-ज्ञान-
आओर 'वेदव्यास' द्वापरमे रचल वेदान्त,

सएह सम्प्रति देखि आर्य्यावर्त्तकेँ आक्रान्त,
बौद्ध नास्तिक धर्म्मसँ, अछि लेल पुनि अवतार,
मनुज नहि ई थिकथि परमेश्वर स्वयं साकार !
धन्य अहँ केरि भाग्य, विद्या, बुद्धि, ज्ञान, विवेक,
दीर्घ सोलह दिवस धरि शास्त्रार्थ केरि ई लेख,
रहत चिर इतिहासमे, आचार्य्य;
उठु, हिनक शिष्यत्व वा सहकारिता कर्त्तव्य थिक हे आर्य्य !
शुद्ध आस्तिक सनातन धर्म्मक सुरक्षण हेतु
होउ तत्पर, देशमे फहराउ उज्ज्वल केतु ।
मुनिवरक उपदेश सुनि, गतमोह संयत-चित्त,
नम्र मण्डन मिश्र, विद्यावित्त,
प्रतिश्रुत शिष्यत्व अरु सन्यास ग्रहणक हेतु
चलल मैथिल-केतु ।
किन्तु, आसन छोड़ि, रोकल, तड़ित-नारी-मूर्ति,
शारदा-सम 'शारदा'—छल जनिक उज्ज्वल कीर्त्ति
रूप, विद्या, विनय अरु व्यवहारमे नहि आन

छल जगतमे, पाओल जे सम्मान-
अलौकिक शास्त्रार्थ निर्णायकक उत्तम स्थान !
आओर सम्पादन कएल निष्पक्ष,
देल 'शंकर' केँ विजय वरमाल्य,
मंडन मिश्र केरि समक्ष ।
सहल मार्मिक व्यथा, अन्तर्वेदना अरु ग्लानि,
अपन स्वामिक पराजय, निजकुलक, अरु मिथिलाक
कत बड़ हानि,
रोकि सभ उद्वेग, बैसलि मौन, धए हिअ धीर,
वाड़वानल, ग्रीष्म-अन्तः-स्रोतयुत जलनिधि यथा गंभीर ।
अन्तमे उठि कहल—"मुनिवर, उपस्थित विद्वान ।
हमर समुचित कथन पर दिअ ध्यान;—
विजय पाओल जगद्गुरु आचार्य्य,
किन्तु ई आंशिक विजय, मम आर्य्य,
गृही, हुनकर शक्ति हम अर्द्धांङ्गिनी, मध्यस्थ
छलहुँ एहि शास्त्रार्थ विच, 'शंकर' स्वयं सन्यस्त,

ब्रह्मचारी, पूर्ण छथि; ओ करथु पुनि शास्त्रार्थ
एतए, हमरा संग, अरु यदि विजय होइन्हि यथार्थ,
तखन विजयी, अन्यथा ई पराजय स्वीकार
करब नहि एहि रूप, नहि मम आचर्य-देव उदार
कए सकै' छथि ग्रहण, ई सन्यास वा शिष्यत्व
शंकरक, एहि विजयमे नहि रहत किछुओ तत्त्व ।"
सूनि ई दृढ़ मधुर ध्वनि गंभीर,
दिव्यवाणी सम, प्रभावित, अचल पलकहिँ थीर,
देखितहिँ रहलाह सभ किछु काल
विजयपत्ती दक्षिणक विद्वान भेल बेहाल ।
अन्य पंडितवृन्द बैसल शान्त,
उचित-अनुचित-ज्ञान-शून्य नितान्त ।
भेल मैथिलवृन्द उत्सुक चित्त, अरु सोल्लास,
जनु तिमिरवन गहनवन बिच पाबि पूर्ण प्रकाश,
मनहि मन सभ अपन देवी देवता गोहराए,
शक्तिरूपा 'शारदा' पर आस दृष्टि लगाए ।

महाविदुषी मैथिली-महिलागणक जयकार
शारदापक्षक समर्थन कएल तीव्र प्रकार।
दुःख-पुनि आनन्दसँ विह्वल परम धीमान
आर्य्य मंडन मनहि मन श्रद्धा सहित सम्मान,
कएल निज प्राणप्रिया अर्द्धाङ्गिनीक विशेष
अलौकिक-प्रतिभा-समुद्भासित वदन अनिमेष
देखि रहला' मौन।

विजयी शंकरक स्थिर बुद्धि
भेल किछु विचलित, हुनक विज्ञान, विद्या, सिद्धि,
आइ देखल प्रथम नारी मूर्त्ति,
शारदा वा भारती प्रतिमूर्त्ति !
किन्तु किञ्चित विजयमद, पुरुषत्व भावावेश,
धीर, मृदु, 'शंकर' कहल—

"हे देवि, किछु अवशेष
रहल नहि निर्णय करक; यद्यपि एहन शास्त्रार्थ,
अरु अहँक प्रतिभा, विशद वैदुष्य, ज्ञान; यथार्थ

प्रथम हम देखल एतए सानन्द
रहत चिर मम-स्मृति-पटलपर शुभ्र ज्योति अमन्द ।
किन्तु—भारति ! देवि ! पुनि किअ, व्यर्थ वादविवाद
व्यर्थ पुनि शास्त्रार्थ केरि प्रमाद,
व्यर्थ पुनि किछु दिवस होएत नष्ट—
की प्रयोजन—जखन निर्णय ज्ञात अछि सुस्पष्ट ?
आओर—पुनि शास्त्रार्थ—महिला संग !
होइछ अति संकोच, मम पुरुषत्व, ब्रह्मज्ञानपर ई व्यंग
व्यर्थ जनु करु देवि, करु सुविचार,
चलथु हमरा संग पंडित-प्रवर मिश्र उदार ।" १६०
देल उत्तर शारदा—"शंकर, परम विद्वान !
उचित नहि अछि अहँक ई अभिमान,—
अपन निश्चित विजय, अरु पुरुषत्व, निज विज्ञान-
मोहवश अहँ कएल नारी जाति केरि अपमान !
इष्ट वीणापाणि शक्तिक रूप,
ब्रह्मवादिनि भेलि छथि गार्गी, हुनक अनुरूप

अनेको विदुषी एतए जे वेदज्ञान–प्रकाश,
देल जगकेँ, जनिक उज्ज्वल कीर्तिसँ इतिहास
रहत चिर भासित ! हुनक महिला–गणक अपमान ।
ब्रह्मज्ञ नी पुरुष राखथि हेय दृष्टिक ध्यान !
उचित नहि ई अहँक सन आचार्य्य,
भाववश, नहि उचित त्यागब कार्य्य !"
उचित बूझल लोक सभ, अरु कएल शिर–संकेत
महामुनि जैमिनि, विहुँसि शुभ साधुवाद समेत ।

  

चलल पुनि शास्त्रार्थ प्रातःकाल,
स्निग्ध रवि अरुणाभ रश्मिक जाल
कएल उद्भासित बृहत मंडप, जतए बुध-बृन्द
शास्त्र–मधुरस पीबि झूमथि मन्द,
मधुर दक्षिण गन्धवह दोलित यथा अरविन्द ।
आओर दिन प्रतिदिन क्रमहि बीतल समुत्सुक काल ।
शारदा, शंकर स्वयं साकार
मथथि जनु श्रुति स्मृति पुराणक ग्रन्थ,

होन किछु निर्णय, विवादक अन्त !
तखन विदुषी, चतुर-कौशल-पूर्ण पूछल प्रश्न
काम-शास्त्रक गूढ़ विषयक प्रश्न—चिन्ता-मग्न
भेल 'शंकर' मौन, अतिशय व्यस्त,
शैशवहिसँ ब्रह्मचारी, मुक्त ई सन्यस्त,
पढ़ल श्रुति, स्मृति, योग, दर्शन, सकल शास्त्र, पुराण,
कएल तप, अरु पाओल कत अनुभूति, ब्रह्मज्ञान—
किन्तु रहला, सतत विश्वक सृजन ज्ञान अबोध।
आइ नारी लेल निज मायाक बल प्रतिशोध !
जगतवासीकेँ गृहस्थाश्रमक ज्ञान नितान्त
होइछ आवश्यक—विशुद्धाद्वैत केरि सिद्धान्त—
सृष्टि चालनमे करत व्याघात—ई भेल सिद्ध ?
ग्लानि अरु परिताप कंटक बिद्ध
रुद्ध-स्वर 'शंकर' कहल—"हम पराजित छी आज,
धन्य अहँ केरि बुद्धि, विद्याचातुरी, अरु व्याज
कएल हमरा मूक, प्रश्नक उचित उत्तर जन्य,

एक वर्षक समय भिक्षादान चाहिअ, अन्य
रूप धरि ई काम विषयक ज्ञान
सीखि आएब, देब उत्तर यथाविधि सज्ञान।"
विहुँसि कहलन्हि शारदा—"आचार्य्य,
एक प्रश्नक हेतु दोसर जन्म ग्रहणक कार्य्य !
की प्रतिज्ञा छल एतए हे आर्य्य ?
पराजित भए जाथि विजयिक शिष्य—
केहन होएत दृश्य यदि अहँ आज,
छोड़ि निज सन्यास-व्रत मिलि जाइ वर्ण-समाज ?
किन्तु से मम इष्ट नहि,
अहँ वत्सरक उपरान्त
सृष्टि-गतिविधि, अविद्या-संक्रान्त
पूर्णज्ञानी बनि एतए पुनि आउ
आर्य्य मिश्रक सङ्ग धर्म्मक पताका फहराउ।"
मुदित शंकर, स्मित-वदन, स्वीकार
कएल, जय जय धन्य मिथिला मैथिलीक विचार,
मुक्तस्वरसँ सबहिँ गाओल—'शारदा'—जयकार !

मुद्रक
मिथिला-प्रेस दरभङ्गा

प्रथम संस्करण, ५००
१९५१

मूल्य =



मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar. Acclaimed Maithili author and researcher Dr Ramdeo Jha has been kind enough to allow access to his rich personal library for digitalization.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha,

Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy an dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation.. That was a huge loss for Mithila.

But this was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195, 8877213104 vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥


॥ बिज्ञापन ॥


मिथिलारिसर्चसोसाइटी

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः
स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तेकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान् ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्तसभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहि सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक—

(१) श्रीमान् लोकनि द्रव्यक सहायता करथि, ताहि द्रव्यें उक्तसभाक द्वारा पुस्तक छपाओलजाय, एहि पुस्तक पर स्वत्व मिथिला रिसर्च सोसाइटीक रहैक पुस्तक विक्रय हो, तल्लब्ध द्रव्य मिथिला देशक उपकारार्थ व्यय हो। (२) अथवा श्रीमान् लोकनि अपना द्रव्यें एहि सभाक द्वारा पुस्तक छपावथि, सभाक दिशसँ प्राचीन दुर्लभ पुस्तक एकत्र कयल जाय, गृहीत पुस्तकक प्रूफ देखल जाय ओ मुद्रण कयल जाय। एहि परिश्रमक बदलामें दशांश मुद्रित पुस्तक अथवा उचित द्रव्य एहि सोसाइटीकें उक्त श्रीमान देथिन्ह। (३) अथवा जे कोनो पुस्तक रिसर्च सोसाइटीक दिशसँ छपय तकर ग्राहकरूपें उक्त सोसाइटीक सहायता श्रीमान् लोकनि करथि, समुचित द्रव्य दय पुस्तक खरीद करथि।

३ रिसर्च सोसाइटीक संरक्षक विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत महाराजाधिराज श्रीमान् मिथिलेश तथा श्रीमान् बाबू शारदाचरण मित्र जज कलकत्ता हाइकोर्ट,—छथि। ओ दरभङ्गाक कलैक्टर साहबसँ प्रार्थना कयलगेल अछि जे ओ सभापति होथि। बाबू श्रीतुलापतिसिंह, बाबू श्री विन्ध्यनाथ झा बी० ए०, बाबू श्री गङ्गानाथझा ऐम० ए०, बाबू श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंहजी, श्री काली बाबू डाक्टर, महामहोपाध्याय पं० श्री चित्रधर मिश्र, कवीश्वर पण्डित श्रीचन्द्र झा, वैयाकरण केसरी पं० श्री परमेश्वर झा इत्यादि सभासदगणमें सँ छथि।

४ रिसर्च सोसाइटीक मेम्बर हयबाक निमित्त फीस एकरुपैया नियत कयलगेल अछि।

५ उक्त विषय सम्बन्धमें जाहि महाशय कें पत्राचार करबाक होइन्ह से निम्न लिखित सेक्रेटरी सँ करथि।

दरभङ्गा
अगस्त १९०६

श्री केशी मिश्र बी० ए०
सेक्रेटरी मिथिलारिसर्चसोसाइटी
दरभंगा।